ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218
PP. No.- 165-166
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

आचार्य पं0 दुर्गाचरण शुक्ल जी के आचार–विचार, मित्र, परिजन एवं आजीविका

1. भानसिंह यादव
2. डॉ0 सरोज गुप्ता

शोध अध्येता– महाराजा छत्रसाल बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, छतरपुर, 2. शोध निर्देशिका– पं. दीनदयाल उपाध्याय शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, सागर (म0प्र0), भारत

Received-04.09.2023, Revised-11.09.2023, Accepted-17.09.2023 E-mail: bhansinghyzdavtkg1988@gmail.com

सारांश: ***आचार्य पं. दुर्गाचरण शुक्ल जी के आचार–विचार– 'बुन्देलखण्ड के अभिनवगुप्त : संस्कृत एवं हिन्दी के प्रकाण्ड विद्वान' पीताम्बर पीठाधीश्वर राष्ट्रगुरु परमपूज्य स्वामी जी महाराज के दीक्षा शिष्य प्रतिभा सम्पन्न आचार्य पं. दुर्गाचरण शुक्ल जी अपने जीवन के 93 वर्ष पूर्ण कर चुके हैं। भारतीय साहित्य, संस्कृति अध्यात्म एवं दर्शन की जीवन्त प्रतिमूर्ति है। अपने संत स्वभाव के कारण न सिर्फ मध्यप्रदेश वरन् राष्ट्रीय स्तर पर देश–प्रदेश में सुविख्यात है। सादा जीवन उच्च विचार, साधारण रहन–सहन, उदारता, दयालुता, धार्मिक आस्था एवं भारतीय संस्कृति के जीवन्त प्रतीक हैं। आप साधक, तपस्वी, वैदिक ऋचाओं के भाष्यकार, लोकभाषा मर्मज्ञ, बुन्देली व्युत्पत्ति कोशाकार, मंत्रदृष्टा एवं सृष्टा, ऊर्जस्वित लेखनी के धनी एवं हसमुख स्वभाव के व्यक्ति हैं।***

कुंजीभूत शब्द– आचार–विचार, मित्र, परिजन, आजीविका, दीक्षा, प्रतिभा सम्पन्न, भारतीय साहित्य, संस्कृति अध्यात्म, प्रकाण्ड।

आचार्य पं. दुर्गाचरण शुक्ल जी के सहयोगी एवं मित्र– आपके समय के प्रसिद्ध साहित्यकार एवं घनिष्ठ मित्र आपके सम्पर्क में रहे है, जिनमें प्रमुख हैं– श्री हरिमोहनलाल श्रीवास्तव (दतिया), पं. उदयशंकर दुबे, पं. हितकिशोर पस्तोर (दतिया), पं. कृष्णकिशोर द्विवेदी जी (टीकमगढ़), श्री रामचरण हयारण मित्र (झांसी), प्रोफेसर धीरेन्द्र वर्मा, स्वनाम धन्य पं. आनंदी लाल जी (भोपाल), पं. श्यामनारायण काश्मीरी, पं. कपिलदेव तैलंग, राजा महाराज देवेन्द्र सिंह जू देव, पं. श्री गुणसागर सत्यार्थी जी, डॉ. प्रभुदयाल मिश्र जी, डॉ. हरिविष्णु अवस्थी जी, डॉ. श्री दुर्गेश दीक्षित जी और बहुत से साहित्यानुरागी सुधीजनों से आपका सम्पर्क रहा है।

आचार्य पं. दुर्गाचरण शुक्ल जी की वंशावली (परिजन)– कान्यकुब्ज शुक्ल परिवार : कुल वंशावली गोत्र–भरद्वाज, वेद– शुक्ल यजुर्वेद, शाखा– माध्यन्दिनी शाखा, कल्पसूत्र– कात्यायन, प्रवर–त्रिप्रवर

आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल इस वंशावली के छठवीं पीढ़ी के सदस्य हैं। इनके पिता, प्रपिता और पितामह कर्मकाण्ड, साधना (तंत्र) के गूढ़ रहस्यों के विद्वान थे और पहले की पीढ़ी संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वानों में गिने गये, ज्योतिष गणित के ग्रन्थों के टीकाकार थे। जिनकी पाण्डुलिपियाँ तथा ग्रन्थ 30 वर्ष पूर्व तक, गाँव (पैतिक स्थान) में उपलब्ध रहे हैं, जो अत्यन्त जीर्णशीर्ण अवस्था में थे। उन्हीं पूर्वजों का विवरण इस प्रकार प्रस्तुत है:–

1. पं. सीताराम – संस्कृत भाषा के विद्वान पण्डित तत्कालीन भागवत कथा वाचक एवं यज्ञाचार्य। पुस्तक पाण्डुलिपि दृष्टव्य नहीं।

2. पं. गोवर्धन एवं पं. अनन्तराम – दोनों ही संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान तथा दोनों के द्वारा ज्योतिष ग्रन्थों की टीकायें (भाष्य) किये गये। कुछ संस्कृत के अन्य ग्रन्थों के भाष्य भी किये गये है, जो पाण्डुलिपियाँ नष्ट हो चुकी है।

3. पं. देवीप्रसाद– व्याकरण एवं तन्त्रशास्त्र के उद्भट विद्वान तथा यज्ञ क्रिया के (यज्ञ प्रक्रिया) विशेषज्ञ। इनके लिखे हुये संस्कृत भाषा में पत्रव्यवहार के पत्र वर्तमान में भी उपलब्ध है।

4. पं. अक्षरादत्त (पं. अच्छेलाल)– व्यवहार में इनका पं. अच्छेलाल नाम ज्यादा प्रचलन में रहा है। ये प्रौढ़ावस्था के पश्चात् पं. देवीप्रसाद के शिष्यत्व में तन्त्रसाधना पश्चात् हनुमत् सिद्धि प्राप्त कर घर त्याग कर अपने पैतृक मंदिर में साधनारत् रहने लगे और जीवन के अन्तिम समय तक पैतिक मंदिर में ही रहे। उनके सम्बन्ध में प्रबुद्ध ग्रामीण विद्वान बताते थे कि वे भागवत कथाकार थे तथा वे कथा के लिये देशाटन कर उपार्जित धन से कन्याओं का विवाह संस्कार कराते थे, उन्होंने उपार्जित धन को कभी घर में नहीं दिया। किवदन्ती है कि उनके द्वारा सैकड़ों कन्याओं का अपने उपार्जित धन से विवाह कराया गया तथा ये हमेशा कमण्डल से ही जलपान करते थे। वे ऐसे निस्पृह समाज को समर्पित साधक थे।

5. पं. मन्नूलाल – जीवन के पूर्वाई में मस्त, संगीत प्रेमी खम्बास (सारंगी जैसा वाद्य) वादक रहे। पिता की मृत्यु पश्चात् पाण्डित्य कर्मकाण्ड में रत् रहकर माँ भगवती साधना में अनेक पुरश्चरण करते थे। वे एक श्रेष्ठ श्रीमद्भागवत कथाकार थे। उनकी भगवद कथा में संस्कृत श्लोक और श्रीधर की टीका के आधार पर व्याख्यान होता था। उनका श्रोताओं को सन्देश था कि श्रीमद्भागवत में तीन चीजें है– 1. ज्ञान, 2. भक्ति 3. वैराग्य।

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- III, Issues-29, YEAR- July-Sept.-2023

वे कहते थे कि कथा सुनने के बाद ज्ञान नहीं हुआ तो कथा अधूरी सुनी। ज्ञान–भक्ति उदय हुई तो श्रोता ने ध्यान से सुना। यदि श्रोता का जीवन संतुलित हो गया तभी सुनाने वाले कथाकार की पूर्ण उपलब्धि है। उन्हें जब भी समय मिलता वे माँ भगवती शारदा को बैरागढ़ स्थान पर उन्हें चण्डी पाठ सुनाने जाया करते। काफी लम्बे अन्तराल तक उन्हें सन्तान प्राप्त नहीं होने पर उन्होंने गंगा के किनारे (विठूर के पास) एक मंदिर में पुत्र प्राप्ति हेतु पुरश्चरण किया। उसके पश्चात् उन्हें दो सन्तानें प्राप्त हुई। कृष्ण एवं दुर्गाचरण।

वर्तमान में परिजनों की जानकारी–

1. आचार्य पं. दुर्गाचरण शुक्ल जी – स्वयं,
2. स्व. श्रीमती क्रांतिदेवी – धर्मपत्नि,
3. पं. अरुण शुक्ल–प्रतिभा – पुत्र–पुत्रवधू,
4. पं. इंद्र–अनुपमा – पुत्र–पुत्रवधू,
5. पं. रविशंकर–रत्ना – पुत्र–पुत्रवधू,
6. अक्षरादित्य–कामना – पौत्र–पौत्रवधू,
7. अनाख्या – पौत्री (चौथी पीढ़ी)।

4. आजीविका– आपने आजीविका के साधन के रूप में मानव जीवन का सर्वोच्च पक्ष एवं समाज सुधार, जन हितैषी, परोपकार का पद चयन किया। शिक्षक पद पर आपकी प्रथम नियुक्ति सन् 1955 में विन्ध्य प्रदेश शासन के शासकीय उच्चतर माध्यमिक उन्नाव (बालाजी) दतिया में हुई। सन् 1958 में स्थानांतरित होकर शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय टीकमगढ़ में पदासीन हुए।

सन् 1970 में जिला–टीकमगढ़ (म.प्र.) के जिला शिक्षा प्रशिक्षण संस्थान में आप पदासीन हुए, यहां अध्ययन अध्यापन के साथ विभिन्न पत्रिकाओं का लेखन एवं वेद–वेदान्त का अध्ययन–अध्यापन किया।

आप सन् 1983 में शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मबई, जिला–टीकमगढ़ में पदासीन होकर अध्ययन–अध्यापन कार्य किया। आपने यहां अध्ययन–अध्यापन के साथ वेद की ऋचाओं का ज्ञान विद्यालय समय के अतिरिक्त समय में शिक्षार्थियों को कराया। इसी कार्यकाल के दौरान शुक्ल जी ने अपने विचारों को आकाशवाणी के माध्यम से, पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से, पत्र–पत्रिकाओं में कल्याण पंचेश्वर, तंत्रगंधा समाचार, पत्रों में जागरण, मध्यप्रदेश संदेश, ओरछा टाइम्स इत्यादि के द्वारा निरंतर समाज को विज्ञान, तकनीकि ज्ञान, शिक्षा की विधियाँ तथा विषयवस्तु को बताया।

आप प्रोन्नति से प्राचार्य पद पर शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय वाबई, जिला–होशंगाबाद में पदासीन हुए। यहां अपने कुशल नेतृत्व एवं कुशलता से विद्यालय का सर्वोत्तम विकास किया एवं शिक्षा में गुणात्मक सुधार करते हुए आप 6 नवम्बर 1990 को आप प्राचार्य स्कूल शिक्षा विभाग से सेवानिवृत्त हुए।

आप शासकीय सेवा निवृत्त हुए, परन्तु साहित्य सृजन, ज्ञान का दान, वेद–वेदान्त का अध्ययन–अध्यापन, पत्रिकाओं का प्रकाशन, पुस्तकों का लेखन, शोधार्थी छात्रों का मार्गदर्शन, लोक भाषा के ज्ञान का प्रकाश चारों ओर आज भी विकीर्ण कर समाज को नई दिशा प्रदान कर रहे हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. ऋषि हयग्रीव कृत शाक्तदर्शनम एवं महर्षि अगस्त्य कृत शक्तिसूत्रम, आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली।
2. महर्षि अगस्त्य दृष्ट ऋग्वेद मंत्र भाष्य, आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल, महर्षि सान्दीपनी राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन।
3. ब्रह्मवादिनी–द्रष्ट मंत्र भाष्य एवं अवदान, आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली।
4. लोक और वेद के अभिनव आचार्य पं. दुर्गाचरण शुक्ल के लोके च वेदे च, डॉ सरोज गुप्ता, पं. अरुण कुमार शुक्ल, जे.टी.एस. पब्लिकेशनस दिल्ली।
5. महादेव, आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल, आदिवासी लोककला एवं बोली विकास अकादमी, मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्, मध्यप्रदेश जनजातीय संग्रहालय, श्यामला हिल्स भोपाल।
6. मदन रस बरसें बुन्देली ललित निबंध, आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल, आदिवासी लोककला एवं बोली विकास अकादमी मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्, मध्यप्रदेश जनजातीय संग्रहालय, श्यामला हिल्स भोपाल।
7. बुन्देली गाथा, डॉ. दुर्गेश दीक्षित, आदिवासी लोककला एवं बोली विकास अकादमी, मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्, मध्यप्रदेश संग्रहालय, श्यामला हिल्स भोपाल।
8. बुन्देली कहावतें और मुहावरे, डॉ. कैलाश बिहारी द्विवेदी, आदिवासी लोककला एवं बोली विकास अकादमी, मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्, मध्यप्रदेश जनजातीय संग्रहालय, श्यामला हिल्स भोपाल।

*****